इस्लाम का परिचय

वहीदुद्दीन ख़ाँ

अनुवादक

नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

बिस्मिल्लाहिर्ररमानिर्रहीम

'अल्लाह, रहमान रहीम के नाम से'

[आर्य समाज स्युहारा, ज़िला बिजनौर ने अपने चौंसठ वर्षीय समारोह के अवसर पर नवम्बर सन् १९५९ के अन्त में एक सप्ताह मनाया। इस मौके पर २९ नवम्बर को एक आम धार्मिक सभा भी हुई जिसमें विभिन्न धर्मों के विद्वानों ने शामिल होकर अपने विचार व्यक्त किये। यह लेख इसी अन्तिम सभा में पढ़ा गया।]

इस जगत का एक खुदा (ईश्वर) है जिसने इसे पैदा किया है और वही इसका मालिक है। खुदा ने एक ख़ास योजना के तहत हम को पैदा किया है, जिसकी जानकारी वह अपने ख़ास और चुने हुए बन्दों के द्वारा हम तक भेजता है, जिन को हम रसूल और पैग़म्बर कहते हैं। हज़रत मुहम्मद (स०) इसी सिलसिले के अन्तिम रसूल हैं। और अब पूरी दुनिया को आप की पैरवी करनी है। जो व्यक्ति आप के संदेश को पाये और फिर उसको न अपनाये, वह सिर्फ़ आप ही का इन्कार नहीं करता, बल्कि वास्तव में खुदा के तमाम नबियों का इन्कार कर देता है। ऐसा व्यक्ति खुदा का आज्ञाकारी नहीं, बल्कि उसका अवज्ञाकारी और नाफ़रमान है और खुदा की कृपाओं और रहमतों में उसका कोई हिस्सा नहीं है।' यह है संक्षेप में इस्लाम का परिचय जिस की मुझे इस लेख में व्याख्या करनी है।

खुदा का वजूद

सबसे पहले इस सवाल को लीजिये कि इस जगत का एक खुदा है। कुछ लोग इस बात को नहीं मानते। उनका कहना है कि यह पूरा कारखाना केवल एक आकस्मिक और इत्तिफ़ाक़ी घटना के रूप में वजूद में आ गया है और अपने आप चला जा रहा है। हक्सले के शब्दों में :—छः बन्दर एक-एक टाइपराइटर लेकर बैठ जायें और अबों खबों साल तक

अललटप तरीक़े से उनको पीटते रहें तो हो सकता है कि उनके काले किये हुए कागज़ों के ढेर में किसी पन्ने पर शेक्सपियर की एक कविता निकल आये। इसी तरह अर्बों और खर्बों साल तक भूत-द्रव्य की अंधी क्रिया के बीच बिल्कुल संयोग से यह संसार बन गया है।

यह जवाब जिसने शताब्दियों से लोगों को धोखे में डाल रखा है, वास्तव में कोई जवाब नहीं है, बल्कि कुछ शब्दों का योगमात्र है, क्योंकि 'संयोग' या 'घटना' स्वतः कोई चीज़ नहीं है। फिर जो चीज़ खुद ही अपना वजूद न रखती हो, वह किसी दूसरी चीज़ को वजूद में लाने का सबब कैसे बन सकती है। यही वजह है कि जगत की यह व्याख्या जगत के ऊपर बिल्कुल लागू नहीं होती। यह सिर्फ़ एक बेबुनियाद दावा है, जो दिमाग़ में गढ़ लिया गया है और जगत की मूल बनावट से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके विपरीत खुदा की धारणा जगत के साथ बिल्कुल मेल खा जाती है, वह खुद जगत के भीतर से बोल रही है।

यह जगत इतना सुव्यवस्थित और इतनी बामक़सद है कि इसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता कि वह किसी आकस्मिक घटना के फलस्वरूप वजूद में आ गया होगा। ज़मीन पर जानदार के जीवन के लिए जो परिस्थितियां और हालात ज़रूरी हैं, वे पूरे तौर से यहां मौजूद हैं। क्या सिर्फ़ संयोग और इत्तिफ़ाक़ के नतीजे में इतनी अच्छी परिस्थितियां पैदा हो सकती हैं?

ज़मीन अपनी धुरी पर एक हज़ार मील प्रति घंटा की चाल से लट्टू की तरह घूमती है। अगर ज़मीन की चाल एक सौ मील प्रति घंटा होती तो हमारे दिन व रात आज के दिन व रात से दस गुना अधिक लम्बे होते। ज़मीन की तमाम हरियाली और हमारी बेहतरीन फसलें सौ घंटे की लगातार धूप में झुलस जातीं और जो बच रहतीं, वे लम्बी रात में पाले से बर्बाद हो जातीं।

सूरज जो हमारी ज़िन्दगी का स्रोत है, अपनी सतह पर बारह हज़ार डिग्री फारेनहाइट से दहक रहा है। यह तपन इतनी ज़्यादा है कि बड़े-बड़े पहाड़ भी इस के सामने जलकर राख हो जायें, परन्तु वह हमारी ज़मीन से

इतनी उचित दूरी पर है कि यह "लगातार दहकने वाली अंगीठी" यानी सूरज हमें हमारी ज़रूरत से ज़्यादा ज़र्रा भर भी गर्मी न दे सके। यदि सूरज अपनी दुगनी दूरी पर चला जाए तो ज़मीन पर इतनी सर्दी पैदा होगी कि हम सब लोग जम कर बर्फ़ हो जायेंगे और अगर वह आधी दूरी पर आ जाए तो ज़मीन पर इतनी गर्मी और तपन बढ़ जायेगी कि तमाम जानदार और तमाम पौधे जल कर राख के ढेर हो जायेंगे।

ज़मीन का गोला वायुमण्डल में सीधा खड़ा नहीं है, बल्कि २३° का कोण बनाता हुआ एक ओर झुका हुआ है। यह झुकाव हमें हमारे मौसम देता है। यह झुकाव न होता तो समुद्र से उठती हुई भाप सीधे उत्तर या दक्षिण को चली जातीं और हमारे महाद्वीप बर्फ़ से ढके रहते।

चांद हम से लगभग ढाई लाख मील की दूरी पर है। इस के बजाय अगर यह सिर्फ़ एक लाख मील की दूरी पर होता तो समुद्रों में ज्वार-भाटा की लहरें इतनी ऊँची उठतीं कि धरती का पूरा गोला दिन में दो बार पानी में डूब जाता और बड़े-बड़े पहाड़ लहरों के टकराने से घिस कर ख़त्म हो जाते।

ये हैं हमारी सृष्टि की कुछ अति साधारण और बहुत ही सादी घटनायें। इनके सिवा बेशुमार ऐसी घटनायें हैं जो प्रकट करती हैं कि हमारी ज़मीन से इन का मेल केवल संयोग द्वारा नहीं हो सकता और न एकमात्र संयोग इन्हें बाक़ी रख सकता है। निश्चय ही कोई है, जो इन-घटनाओं को वजूद में लाया है और उनको इतने सुव्यवस्थित ढंग से निरन्तर बाक़ी रखे हुए है। यह सृष्टि इतनी सुसंगठित और सुव्यवस्थित है कि जब भी हम उस की किसी घटना को ब्यान करते हैं तो वास्तव में उस को सीमित कर देते हैं। जगत के एक-एक कण के भीतर नीति, विधि और हिकमतों के ऐसे ख़ज़ाने छिपे हैं कि जब भी हम उनमें से किसी एक का उल्लेख करते हैं तो ऐसा महसूस होता है मानो उसको हम मामूली दर्जे की चीज़ बना कर पेश कर रहे हैं। ऐसी एक सृष्टि को ख़ुदा की रचना और मख़लूक़ मानना यदि किसी को ख़िलाफ़े अक़्ल मालूम होता है तो इस से ज़्यादा अक़्ल के ख़िलाफ़ बात यह है कि इस सृष्टि को बिना ख़ुदा के

मान लिया जाये।

कुछ लोग कहते हैं कि अगर खुदा ने सब चीजें पैदा की हैं तो खुद खुदा को किस ने पैदा किया है? मगर यह एक ऐसा सवाल है जो हर हाल में पैदा होता है, भले ही हम खुदा को मानें या न मानें।

हम दो में से किसी एक चीज़ को बिलासबब मानने पर मजबूर हैं या खुदा को बेसबब मानें या सृष्टि को। हमारे सामने एक विशाल जगत है, जिसको हम देखते हैं, और जिसका हम अनुभव करते हैं। हम मजबूर हैं कि इस सृष्टि के वजूद को मानें, हम इस का इन्कार कर ही नहीं सकते। फिर हम या तो यह कहें कि सृष्टि खुद से वजूद में आ गई है या यह कहें कि कोई और सत्ता और ताक़त है जिस ने उस को बनाया है। दोनों शक्ल में हम किसी न किसी को बिला सबब स्वीकार करेंगे, फिर क्यों न हम खुदा को बिला सबब मान लें, जिस को मानने की शक्ल में हमारे तमाम सवालों का जवाब मिल जाता है, जबकि सृष्टि को बिला सबब मानने की शक्ल में कोई समस्या हल नहीं होती और वे तमाम सवाल जो इस समस्या के चारों ओर से पैदा होते हैं, वे सब के सब अपनी जगह पर बाक़ी रहते हैं।

कुछ लोग दार्शनिक गूढ़ताओं द्वारा यह साबित करने की कोशिश करते हैं कि सृष्टि कोई चीज़ ही नहीं है, सब कुछ हमारा भ्रम है। परन्तु एक व्यक्ति जब यह बात कहता है तो ठीक उसी वक़्त वह सृष्टि के वजूद को स्वीकार कर लेता है। आख़िर यह सवाल ही क्यों पैदा हुआ कि सृष्टि कोई चीज़ है या नहीं है? सवाल का ज़ाहिर होना खुद ज़ाहिर करता है कि कोई चीज़ है जिसके बारे में सवाल किया जा रहा है और कोई है जिसके दिमाग़ में यह सवाल पैदा हो रहा है—इस प्रकार भ्रमवाद का यह दर्शन एक ही समय में मनुष्य और सृष्टि दोनों को स्वीकार कर लेता है।

खुदा के साथ हमारा सम्बन्ध

खुदा को मानने के बाद फ़ौरन ही यह सवाल पैदा होता है कि उसके साथ हमारा सम्बन्ध क्या है। पचास साल पहले यह विचार किया जाता

था कि अगर खुदा का कोई वजूद है भी, तो इससे हमारा सम्बन्ध नहीं हो सकता, परन्तु आधुनिक क्वानटम सिद्धान्त द्वारा खुद साइंस ने इसका खंडन कर दिया है। पहले यह समझा जाता था कि सृष्टि एक मशीन है, जो एक बार हरकत में लाने के बाद लगातार चली जा रही है। इस सिद्धांत पर साइंसदानों को इतना अधिक विश्वास था कि उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में बर्लिन के प्रोफ़ेसर माक्स प्लान्क (Max Planck) ने जब रोशनी के बारे में कुछ ऐसी व्याख्यायें पेश कीं जो सृष्टि के मशीन होने को ग़लत सिद्ध कर रही थीं तो इस पर तीव्र आलोचनायें होने लगीं और उसका मज़ाक उड़ाया गया, परन्तु इस सिद्धान्त को ज़बरदस्त सफलता प्राप्त हुई और अन्ततः वह तरक्की करके आधुनिक क्वानटम सिद्धान्त (Quantum Theory) के रूप में आज भौतिक शास्त्र के महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों में गिना जाता है।*

प्लान्क का सिद्धांत अपने आरम्भिक रूप में यह था कि प्रकृति छलांगों द्वारा हरकत करती है। सन् १९१७ में आइन स्टाइन ने इस बात की व्याख्या की कि प्लान्क का सिद्धान्त केवल अनिरन्तरता (discontinuity) ही सिद्ध नहीं करता, बल्कि अधिक क्रान्तिमय परिणामों का पोषक है। यह कार्य-कारण नियम को उसके उच्च स्थान से अलग कर रहा है, जो इससे पहले प्राकृतिक संसार की तमाम घटनाओं का एक मात्र पथ प्रदर्शक समझा जाता था। प्राचीन विज्ञान ने पूरे विश्वास के साथ यह एलान किया था कि प्रकृति केवल एक ही रास्ता अपना सकती है, जो सबब और नतीजे की बराबर कड़ियों के मुताबिक़ उसके आरम्भ से लेकर परिणाम तक तै हो चुका है, परन्तु अब मालूम हुआ कि यह एकमात्र अपूर्ण ज्ञान का फल था। पहले यह कहा जाता था कि खुदा को अगर मानना ही है तो प्रथम कारण के रूप में उसे मान लो, वरन आज सृष्टि को खुदा की कोई ज़रूरत नहीं है। अब मालूम हुआ कि

* व्याख्या के लिये देखिये Modern Scientific Thought P.P. 12-20

सृष्टि केवल पहली बार गतिमान होने के लिए किसी प्रथम संचालक की मुहताज नहीं थी, बल्कि वह प्रतिक्षण गतिमान बनाए जाने की मुहताज है। क्वान्टम सिद्धान्त दूसरे शब्दों में यह बताता है कि सृष्टि एक स्वसंचालित मशीन नहीं है, बल्कि वह एक ऐसी मशीन है, जिसको प्रतिक्षण चलाया जा रहा है। एक जीवित व स्थिर सत्ता की कृपा है जो इसे बाक़ी रखे हुए है। यदि एक क्षण के लिये भी वह अपनी कृपा वापस ले ले तो सम्पूर्ण सृष्टि इस तरह ख़त्म हो जायेगी, जैसे सिनेमा घर में बिजली का सिलसिला टूटने पर पर्दे से तमाम चित्र ग़ायब हो जाते हैं और दर्शकों के सामने एक सफ़ेद कपड़े के अलावा और कुछ नहीं रहता। मानो इस संसार का प्रत्येक कण अपने वजूद और अपनी हरकत के लिये प्रतिक्षण सर्व-शक्तिमान सत्ता से आज्ञा चाहता है। इसके बिना वह अपनी हस्ती को क़ायम नहीं रख सकता।

जगत के साथ खुदा का यह संबंध खुद बताता है कि मनुष्य के साथ उसका संबंध क्या होना चाहिये। स्पष्ट है कि जिसने हमें पैदा किया है, जो हमारे लिए मुनासिब तरीन हालात को बराबर बाक़ी रखे हुए है और उनको हमारे हक़ में ठीकठाक करता रहता है, जो प्रतिक्षण हमारा पालन-पोषण कर रहा है, उसका हमारे ऊपर यह अनिवार्य अधिकार है कि हम अपने मुक़ाबले में उसकी उच्च व श्रेष्ठ हैसियत को स्वीकार करें और बिल्कुल उसके बन्दे बन जायें। मनुष्य जिस आचरण-व्यवस्था से वाक़िफ़ है, उसमें सबसे ज़्यादा स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण आचरण यह है कि एहसान करने वाले का एहसान माना जाये, एहसान करने वाला भले ही अपनी ओर से न दबाये, परन्तु जिसके साथ एहसान किया जाता है वह खुद उसके सामने दब जाता है, एहसान करने वाले के आगे उसको नज़र उठाने की हिम्मत नहीं होती। इसका अर्थ यह है कि खुदा का खुदा होना खुद ही इस बात का तक़ाज़ा करता है कि हम उसकी खुदाई (ईश्वरत्त्व) को स्वीकार करें और उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने को अपने जीवन का मक़्सद बनायें। बन्दे की ओर से खुदा के आज्ञापालन के लिये इसके अलावा किसी और दलील की ज़रूरत नहीं।

लेकिन बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं है। यह केवल सत्य के जान लेने का तक़ाज़ा नहीं है कि हम ख़ुदा की ख़ुदाई और उसके मुक़ाबले में अपनी ग़ुलामी को स्वीकार करें। सच तो यह है कि हमारे लिए इसके अलावा और कोई राह नहीं है। हमारे जीवन की सारी समस्यायें ख़ुदा से सम्बन्धित हैं। हमको जो कुछ मिलेगा उसी से मिलेगा, उसके अलावा कोई और हमें कुछ नहीं दे सकता। हम इस सृष्टि में इतने बेबस और मजबूर हैं कि ख़ुदा की मदद के बिना एक क्षण के लिये भी अपना वजूद बाक़ी नहीं रख सकते। फिर ख़ुदा को छोड़कर हम और कहां जा सकते हैं।

जरा ध्यान दीजिये, भारत की उत्तरी सीमा पर हिमालय पहाड़ का ढाई हज़ार मील लम्बा यह सिलसिला किसने क़ायम किया है? हमने या ख़ुदा ने? यदि हिमालय पहाड़ न होता तो बंगाल की खाड़ी से उठने वाली दक्षिणी पूर्वी हवायें जो हर साल हमारे लिये वर्षा लाती हैं, बिल्कुल वर्षा न करतीं और सीधी रूस की ओर निकल जातीं, जिसका नतीजा यह होता कि पूरा उत्तरी भारत मंगोलिया की तरह रेगिस्तान होता।

आपको मालूम है कि सूर्य अपनी असाधारण आकर्षण-शक्ति से हमारी ज़मीन को खींच रहा है और ज़मीन एक केन्द्रापग बल (Centrifugal force) द्वारा उसकी ओर खिंच जाने से अपने आपको रोकती है और इस तरह वह सूर्य से दूर रह कर वायुमण्डल के भीतर अपना वजूद बाक़ी रखे हुए है। अगर किसी दिन ज़मीन का यह बल ख़त्म हो जाये तो वह लगभग छः हज़ार मील प्रति घंटा की चाल से सूर्य की ओर खिचना शुरू हो जायेगी और कुछ हफ़्ता में सूर्य के भीतर इस तरह जा गिरेगी, जैसे किसी बहुत बड़े अलाव के भीतर कोई तिनका गिर जाये। स्पष्ट है कि यह ताक़त ज़मीन को हमने नहीं दी है, बल्कि उस ख़ुदा ने दी है, जिसने ज़मीन को पैदा किया है।

सृष्टि के जिस हिस्से में हम रहते हैं उसका नाम सौर संहति (Solar System) है। अगर आप किसी बहुत दूर के स्थान पर बैठ कर इस व्यवस्था का निरीक्षण कर सकें तो आप देखेंगे कि अथाह शून्य के भीतर एक आग का गोला भड़क रहा है, जो हमारी ज़मीन से तेरह लाख गुना

बड़ा है, जिससे इतने बड़े-बड़े अंगारे निकलते हैं, जो कई-कई लाख मील तक वायुमण्डल में उड़ते चले जाते हैं, इसी का नाम सूर्य है। फिर आप उन ग्रहों को देखेंगे जो सूर्य के चारों ओर अरबों मील के घेरे में पतिंगों की तरह चक्कर लगा रहे हैं। इन दौड़ती हुई दुनियाओं में हमारी ज़मीन अपेक्षतः एक छोटी दुनिया है, जिसकी गोलाई लगभग २५ हज़ार मील है। यह हमारा सौर संहति है, जो देखने में बहुत बड़ा मालूम होता है, परन्तु सृष्टि के विस्तार के मुक़ाबले में इसकी कोई हैसियत नहीं। सृष्टि में इतने बड़े-बड़े तारे हैं कि जिनके ऊपर हमारा पूरा सौर संहति रखा जा सकता है। इस अनन्त व असीम सृष्टि में हमारी ज़मीन वायुमण्डल में उड़ने वाले एक कण से भी ज़्यादा मामूली है। हम एक छोटे से कीड़े की भांति उस कण से चिमटे हुए हैं और शून्य में एक कभी न ख़त्म होने वाली यात्रा में व्यस्त हैं।

यह सृष्टि के भीतर हमारी हैसियत है। विचार कीजिए, मनुष्य किस दर्जा तुच्छ और हक़ीर है और बाह्य शक्तियों के मुक़ाबले में कितना ज़्यादा मजबूर है। फिर जब हमारी हैसियत यह है तो हम जगत के पैदा करने वाले से मदद मांगने के अलावा और क्या कर सकते हैं। जिस प्रकार एक छोटे बच्चे की पूरी दुनिया उसके मां-बाप होते हैं। उसका जीवन, उसकी ज़रूरतों की पूर्ति और उस के भविष्य का आश्रय बिल्कुल उस के मां-बाप पर होता है। इसी तरह बल्कि इस से कहीं ज्यादा मनुष्य अपने पालनहार का मुहताज है। हम ख़ुदा की मदद और उसके पथ-प्रदर्शन और रहनुमाई के बिना अपने लिए किसी चीज़ के बारे में सोच भी नहीं सकते। वही हमारा सहारा है और उसी की ओर हमें दौड़ना चाहिए।

इस तफ़्सील से यह बात साफ़ हो गई कि इन्सान ख़ुदा की रहनुमाई और उस की मदद का मुहताज है। ख़ुदा की ओर से इन्सान की यही हैसियत निश्चित होती है और खुद मनुष्य के लिये भी इस के अलावा कोई चारा नहीं है कि वह ख़ुदा से अपने लिए मदद और रहनुमाई की प्रार्थना करे।

ज्ञान की प्राप्ति

यहां पहुंच कर जब हम अपने चारों ओर की दुनिया पर विचार करते हैं तो हमें मालूम होता है कि जगत के पैदा करने वाले की ओर से अपनी पैदा की हुई चीज़ों के लिए मदद और रहनुमाई का एक मुसलसल अमल जारी है। जिसको जिस चीज़ की ज़रूरत है, उस को वह चीज़ पहुंचाई जा रही है। एक मामूली भिड़ की मिसाल लीजिये। भिड़ का तरीक़ा है कि अंडे देने से पहले ज़मीन में एक गड़हा खोदती है और एक टिड्डे को क़ाबू में कर के उस को गड़हे में रख देती है। ऐसा करते समय वह बड़ी चतुराई से टिड्डे के उसी ख़ास स्थान पर डंक मारती है, जिस से टिड्डा मरता नहीं, केवल बेहोश रहता है और ताज़ा गोश्त का भंडार बन जाता है। भिड़ अब इसी बेहोश टिड्डे के चारों ओर अंडे देती है ताकि अंडों से निकल कर बच्चे उस जीवित टिड्डे को धीरे-धीरे खाते रहें, क्योंकि मुर्दा गोश्त इन बच्चों के लिये नुक़सानदेह है। इतना इन्तिज़ाम कर लेने के बाद भिड़ वहां से उड़ जाती है और फिर कभी आकर अपने बच्चों को नहीं देखती। परन्तु इस के बावजूद भिड़ का यह बच्चा जब बड़ा होता है तो वह भी ठीक इसी अमल को दुहराता है। तमाम भिड़ें इस काम को एक बार और पहली बार बिल्कुल ठीक-ठीक करती है।* विचार कीजिये कि वह कौन है जो इस भीड़ के बच्चे को सिखाता है कि अपनी नस्ल को जारी रखने के लिए वह भी वही अमल करे जो उसके मां-बाप ने उस के साथ किया था। हालांकि अपने मां-बाप के अमल को उसने कभी नहीं देखा।

दूसरी मिसाल उस लम्बी मछली की है जिसे अंग्रेज़ी में एल (Eel) कहते हैं। ये अनोखे जानदार अपनी जवानी में हर जगह के जल-केन्द्रों और नदियों मे निकल-निकल कर बर्मूडाज़ द्वीप के पास समुद्र की एक गहरी तह में जाते हैं। यूरोप की एलें अटलांटिक में तीन हज़ार मील का रास्ता तय कर के यहां पहुंचती हैं। वहीं ये मछलियां बच्चे दे कर मर

* इसी अद्‌भुत क्रिया को देख कर दार्शनिक बर्गसां ने कहा था— क्या भिड़ ने किसी स्कूल में जीवनशास्त्र का घोर अध्ययन किया है।

जाती हैं। ये बच्चे जब आंखें खोलते हैं तो अपने आप को सुनसान जल-केन्द्र में पड़ा हुआ पाते हैं। उन के पास बज़ाहिर मालूमात करने का कोई साधन नहीं होता। फिर भी वे वहां से लौट कर दुबारा उन्हीं किनारों पर आ लगते हैं, जहां से उनके मां-बाप चले गए थे। वे आगे बढ़ते हुए अपने मां-बाप वाली नदियों, झीलों, और जल-केन्द्रों में पहुँच जाते हैं। यही वजह है कि किसी भी जल-केन्द्र से एलें हमेशा के लिए ग़ायब नहीं हो जातीं। और यह सब कुछ इस प्रकार होता है कि अमरीका की कोई एल यूरोप में नहीं मिलती और न यूरोप की कोई एल अमरीका के समुद्रों में पाई जाती है। आने जाने की यह मालूमात उन्हें कहां से हासिल होती हैं?

यह काम "वह्य" द्वारा होता है। वह्य पैग़ाम पहुंचाने के उस अप्रकट सिलसिले को कहते हैं, जो ख़ुदा और उस की मख़्लूक़ के बीच जारी है। कोई प्राणी जीवन गुज़ारने के लिए क्या करे और सृष्टि के रचयिता ने अपनी सामूहिक योजना के भीतर उस के ज़िम्मे जो काम छोड़ा है, उसे किस प्रकार पूरा करे, इसी को बताने का नाम वह्य है। इस वह्य की दो क़िस्में हैं। एक वह जिस का सम्बन्ध मनुष्य के सिवा अन्य चीज़ों से है और दूसरी वह जिस का सम्बन्ध मनुष्य से है।

मनुष्य के अलावा जितनी जानदार चीज़ें इस ज़मीन पर पाई जाती हैं, वे सब की सब इरादे से खाली हैं। उन का काम किसी सोचे समझे फ़ैसले व इरादे के तहत नहीं होता, बल्कि एक अनजाने रूप में स्वाभाविक मैलान के तहत होता है, जिस को हम 'प्रकृति' कहते हैं। ये मानो एक प्रकार की ज़िन्दा मशीनें हैं जो सीमित दायरे में अपना तयशुदा काम कर के ख़त्म हो जाती हैं। इस प्रकार के जानदारों के लिए 'छोड़ने व अपनाने' का कोई प्रश्न नहीं। इसलिए इन के पास जो वह्य आती है, वह हुक्म और क़ानून की शक्ल में नहीं आती, बल्कि 'प्रकृति' या 'स्वभाव' की शक्ल में आती है। इनकी बनावट ही इस तरह की होती है कि वे एक ख़ास काम को बार-बार दुहराते रहें, लेकिन मनुष्य एक ऐसी रचना है जो फैसले की ताक़त रखता है। वह अपने इरादे से किसी

काम को करता है और किसी काम को नहीं करता। वह एक काम करना शुरू करता है फिर उसे जान बूझ कर छोड़ देता है और एक काम नहीं करता और बाद को उसे करने लगता है। इस से स्पष्ट हुआ कि मनुष्य भी हांलाकि उसी तरह खुदा का बन्दा है जिस तरह उसकी दूसरी रचनायें, परन्तु उसको इम्तिहान की हालत में रखा गया है। जो काम दूसरी चीज़ों से 'प्रकृति' व 'स्वभाव' के तहत लिया जा रहा है, इन्सान को वही काम अपने फ़ैसले और इरादे से करना है, यही वजह है कि इन्सान के पास जो वह्य आती है, वह हुक्म और क़ानून की शक्ल में आती है। दूसरे शब्दों में आम जानदारों की वह्य उनके 'स्वभाव' में डाल दी गई है और इन्सान की वह्य बाहर से इसे सुनाई जाती है। आम जानदारों को क्या करना है इस का इल्म वे पैदाइशी तौर पर अपने साथ ले कर आते हैं। इस के विपरीत इन्सान जब अक्ल व होश की उम्र को पहुंचता है तो खुदा की ओर से पुकार कर उसे बताया जाता है कि तुम को क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये।

यह पैग़ाम पहुंचाने का ज़रिया रिसालत (ईश दूतत्त्व) है। जो व्यक्ति यह पैग़ाम लेकर आता है, उस को हम रसूल कहते हैं। उस का तरीक़ा यह है कि अल्लाह अपने बन्दों में से एक नेक बन्दे को चुन लेता है और उस के दिल पर अपना पैग़ाम उतारता है। इस प्रकार रसूल वह व्यक्ति है जो सीधे (Directly) खुदा से उसकी प्रसन्नता का ज्ञान हासिल कर के दूसरे इन्सानों तक पहुंचाता है। रसूल मानो बीच की वह कड़ी है जो बन्दों को उस के खुदा से जोड़ती है।

'वह्य' की समस्या

अब हमें इस सवाल पर विचार करना है कि किसी ख़ास बन्दे पर खुदा की वह्य किस प्रकार आती है और यह कि मौजूदा ज़माने में वह कौन-सी ''वह्य'' है जिससे हमें खुदा की प्रसन्नता का ज्ञान प्राप्त होगा।

इस समस्या को समझने के लिये एक मिसाल लीजिये। इन्सान ने जो मशीनें और जो अस्त्र बनाये हैं वे लगभग सबके सब लोहे के हैं।

यदि लोहे का इतिहास सामने रखा जाये तो यह बात अति विचित्र मालूम होगी कि मनुष्य ने किस तरह उसे मालूम किया, जबकि मनुष्य को लोहे के बारे में पहले से कोई ज्ञान न था, उसने किस प्रकार उसके कणों को इकट्ठा किया जो विभिन्न पदार्थों के सम्मिश्रण की शक्ल में ज़मीन की विभिन्न चट्टानों से मिलकर बिखरे पड़े थे, और फिर उन्हें शुद्ध लोहे की शक्ल में बदल दिया?

यही हाल दूसरे आविष्कारों का भी है। यह बात किसी तरह समझ में नहीं आती कि इन आविष्कारों और खोजों की ओर इन्सानी अक़्ल की रहनुमाई किस प्रकार हुई? वह कौन-सी ताक़त है जो अनुभव एवं निरीक्षण करते समय एक वैज्ञानिक को इस मर्म तक पहुंचा देती है, जहां पहुंचकर उसे एक मुफ़ीद और कारामद नतीजा हासिल होता है? जो बात हमको मालूम नहीं थी, वह कैसे मालूम हो गई? इस ज्ञान का साधन वही 'ईश्वरीय कृपा' है जिसे हम वह्य कहते हैं। सब कुछ जानने वाला अपने ज्ञान में से थोड़ा-सा हिस्सा उसको दे देता है, जो कुछ नहीं जानता। यह कृपा वह्य का प्रारम्भिक भाग है, जो अनजाने रूप में आती है और प्रत्येक व्यक्ति को उसमें से हिस्सा मिलता है।

दूसरे प्रकार की वह्य अधिक प्रगतिशील है, जो जानते-बूझते आती है और केवल उन लोगों के पास आती है, जिनको रिसालत (ईश-दूतत्त्व) के लिये चुन लिया गया हो। इन्सान के पास सत्य का ज्ञान और जीवन व्यतीत करने का तरीक़ा इसी दूसरी प्रकार की वह्य द्वारा भेजा जाता है।

वह्य की हक़ीक़त को हम बस इतना ही समझ सकते हैं, इससे अधिक की मांग वास्तव में एक ऐसी मांग है जो मनुष्य के बस में नहीं है। एक उड़ते हुए जहाज़ को ज़मीन से बेतार के तार द्वारा संदेश भेजा जाता है, जिसको हवाई जहाज़ पर बैठा हुआ आदमी पूरे विश्वास के साथ साफ़ शब्दों में सुन लेता है। यह हमारे निकट के जीवन की एक घटना है, मगर आज तक इसकी पूर्ण युक्ति न पेश की जा सकी कि यह घटना कैसे वजूद में आती है। यही हाल उन तमाम घटनाओं का है,

जिनको हम इस धरती पर जानते हैं। हम तमाम तथ्यों को केवल संक्षेप में जानते हैं। जैसे ही हम किसी तथ्य को आख़िरी हद तक समझने की कोशिश करते हैं, हमारी शक्तियां जवाब देने लगती हैं और मालूम होता है कि इस प्रकार का पूर्ण ज्ञान हमारे बस में नहीं है। ऐसी सूरत में वह्य की हक़ीक़त को अच्छी तरह समझने की मांग करना किसी ऐसे ही व्यक्ति का काम हो सकता है जो स्वयं अपनी हक़ीक़त से बेख़बर हो।

साइंस ने अब यह मान लिया है कि पूरी हक़ीक़त की जानकारी हासिल करना मनुष्य के बस में नहीं है। इस सम्बन्ध में मैं प्रो० हाइज़ेन बर्ग (Heisen Berg) की खोज की मिसाल पेश करूंगा, जिसे वह 'संदिग्धता का सिद्धान्त' (Principle of Indeterminacy) का नाम देता है। जेम्ज़जेन्ज़ इस सिद्धान्त की व्याख्या करते हुए लिखता है:—

''पुरातन विज्ञान का विचार था कि किसी अणु, उदाहरणार्थ एक विद्युदणु (Electron) का स्थान निश्चित रूप से बताया जा सकता है, जबकि हम यह जान लें कि किसी ख़ास समय में वायुमण्डल के भीतर उसका स्थान और उसकी रफ़्तार क्या है। यदि इन जानकारियों के साथ वाह्य प्रभावपूर्ण शक्तियों का भी ज्ञान हो जाये तो विद्युदणुओं (Electrons) के पूर्ण भविष्य को निर्धारित किया जा सकता था और अगर सृष्टि के तमाम अणुओं के बारे में इन बातों का ज्ञान हो जाता तो सम्पूर्ण सृष्टि के बारे में भविष्यवाणी की जा सकती थी।

परन्तु हाइज़न बर्ग के व्याख्यानुसार मौजूदा साइंस अब इस नतीजे पर पहुंची है कि इन बातों की खोज में प्राकृतिक नियम बाधा डाल रहे हैं। यदि हम यह जान लें कि एक विद्युदणु वायुमण्डल में किस स्थान पर है, जब भी हम ठीक-ठीक नहीं बता सकते कि वह किस रफ़्तार से हरकत कर रहा है। प्रकृति किसी हद तक सीमान्त विभ्रम (Margin of Error) की आज्ञा देती है, परन्तु यदि हम इस सीमान्त में घुसना चाहें तो प्रकृति हमारी कोई सहायता नहीं करती। बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि प्रकृति बिल्कुल सही नापों से बिल्कुल ही अनभिज्ञ है। इसी

तरह अगर हमें किसी विद्युदणु की हरकत की ठीक-ठीक रफ़्तार मालूम हो तो प्रकृति हमें वायुमण्डल के भीतर उसका सही स्थान पता लगाने नहीं देती, मानो विद्युदणु का स्थान और उसकी हरकत किसी लालटेन की सलाइड की दो विभिन्न दिशाओं पर अंकित है। अगर हम सलाइड को किसी ख़राब लालटेन में रखें तो हम दो दिशाओं के बीच के आधे को प्रकाश में ला सकते हैं और विद्युदणु के स्थान और उसकी हरकत दोनों को कुछ न कुछ देख सकते हैं। अच्छी लालटेन द्वारा ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि हम एक पर जितना अधिक प्रकाश डालेंगे, दूसरा उतना ही धुंधला होता चला जायेगा। ख़राब लालटेन, प्राचीन विज्ञान है, जिसने हमें इस भ्रम में डाल रखा है कि यदि हमारे पास बिल्कुल पूरी लालटेन हो तो हम किसी मुख्य समय पर अणु के स्थान और उसकी रफ़्तार का ठीक-ठीक अन्दाज़ा कर सकते हैं। यही धोखा था जिसने साइंस में निश्चयता (Determinism) को दाख़िल कर दिया, मगर अब जबकि मौजूदा साइंस के पास अधिक उत्तम लालटेन है, उसने हमको सिर्फ़ यह बताया है कि हालात व हरकत का निर्धारण वास्तविकता के दो विभिन्न पहलू हैं, जिन्हें हम एक ही समय में प्रकाश में नहीं ला सकते।"

(Modern Scientific Thought P. P. 17-18).

इस सिलसिले में आख़िरी सवाल यह है कि ख़ुदा की वह्य जो अलग-अलग ज़मानों में इन्सानों के पास आती रहती है, उनमें से कौन-सी वह्य है, जिसका आज के इन्सान को पालन करना है। इसका जवाब बिल्कुल आसान है। बाद के लोगों के लिए वही वह्य पालन करने योग्य हो सकती है जो सबके बाद आई हो। सरकार एक देश में किसी व्यक्ति को अपना राजदूत बना कर भेजती है। स्पष्ट है कि उस व्यक्ति का यह प्रतिनिधित्व और नुमाइन्दगी उसी समय तक के लिये है, जब तक वह अपने इस पद पर आसीन है, जब उसकी अवधि समाप्त हो जाये और दूसरे व्यक्ति को उस पद पर नियुक्त कर दिया जाये तो उसके बाद वही व्यक्ति सरकार का प्रतिनिधि होगा जिसको

सबसे आख़िर में प्रतिनिधित्व का मौक़ा दिया गया है।

इस एतबार से हज़रत मुहम्मद (स०) ही वह अन्तिम रसूल हैं, जो आज और आगे क़ियामत तक के लिए मानवता के पथप्रदर्शक और रहनुमां हैं, जो सातवीं शताब्दी में अरब से उठे थे, जिनके बाद न कोई नबी हुआ और न भविष्य में कोई नबी होगा। आपका तमाम नबियों के बाद आना इस बात का पर्याप्त कारण है कि आपको और केवल आपको वर्तमान और भविष्यत् के लिए ख़ुदा का प्रतिनिधि माना जाये, क्योंकि बाद को आने वाला अपने से पहले आने वालों को मन्सूख़ कर सकता है, मगर पहले आने वाला अपने बाद आने वाले को मन्सूख़ नहीं कर सकता।

हो सकता है मानव-इतिहास की सबसे पुरानी और आरम्भिक धार्मिक पुस्तक ऋग्वेद हो जो ख़ुदा के आदेशानुसार संपादित की गई हो, जैसा कि इंजील अपेक्षतः मध्यकालीन ग्रन्थ है, परन्तु अब ये तमाम ग्रंथ मन्सूख़ हो चुके हैं, इसके अतिरिक्त कि इनमें से कोई ग्रन्थ भी अपने को अंतिम और स्थाई ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत नहीं करता, केवल यह बात कि वे ख़ुदा के आख़िरी हिदायतनामा (क़ुरआन) से पहले उतारे गये थे, उनको आज के लिए मन्सूख़ करती हैं।

एक व्यक्ति कह सकता है कि हम हज़रत मुहम्मद (स०) को ख़ुदा का रसूल ही क्यों मानें? मेरा जवाब यह है कि जिन कारणों से आप दूसरे रसूलों को रसूल मानते हैं, उन्हीं कारणों से आख़िरी रसूल को रसूल मानना पड़ेगा। आप किसी दूसरे के बारे में यह साबित करने के लिए कि वह ख़ुदा की ओर से आये थे, जो भी नियम बनायेंगे और जो उक्तियां प्रस्तुत करेंगे, ठीक उन्हीं नियमों और उक्तियों के आधार पर आपको मुहम्मद (स०) को भी ख़ुदा का रसूल मानना होगा। अगर आप आख़िरी रसूल का इन्कार करते हैं, तो आपको तमाम रसूलों का इन्कार कर देना पड़ेगा और दूसरे रसूलों को मानते हैं तो आपके लिए इसके सिवा कोई चारा नहीं कि आख़िरी रसूल को

भी स्वीकार करें और ज्योंही आप आख़िरी रसूल को स्वीकार करते हैं, आपके लिए ज़रूरी हो जाता है कि उसी को आख़िरी सनद भी मानें। मुहम्मद (स०) को रसूल मानना और आपको आख़िरी सनद तस्लीम न करना दोनों बातें एक दूसरे के प्रतिकूल हैं, जो एक साथ इकट्ठा नहीं हो सकतीं। ख़ुदा के आख़िरी हुक्म की मौजूदगी में उसके पिछले हुक्मों की बात करना ख़ुदा के आज्ञापालन का एक ऐसा तरीक़ा है, जिससे ख़ुदा कभी प्रसन्न नहीं हो सकता, यह तो ख़ुद अपने मन का आज्ञापालन है न कि ख़ुदा का आज्ञापालन।

इस्लाम का संक्षिप्त परिचय

अब मैं संक्षेप में यह बताना चाहता हूं कि वह सन्देश क्या है जिसको अन्तिम रसूल हज़रत मुहम्मद (स०) ने हमको और हमारी आगामी नस्लों को दिया है। इस संदेश को चार शिर्षकों के अन्तर्गत इकट्ठा किया जा सकता है।

(१) ख़ुदा की सही धारणा।
(२) मनुष्य के पैदा होने का मक़सद और सृष्टि के साथ उसका सम्बन्ध।
(३) मनुष्य ख़ुदा से सम्बन्ध जोड़ने के लिए क्या करे।
(४) व्यक्तिगत आचरण और सामाजिक क़ानून क्या हो।

सबसे पहली चीज़ जो रसूल ने हमको बताई वह यह कि इस सृष्टि का एक ख़ुदा है। यह ख़ुदा एक है, कोई किसी हैसियत से भी उसका साझी नहीं। वह सब कुछ करने की ताक़त रखता है और वही है जो तमाम घटनाओं को वजूद में ला रहा है। इस तथ्य की एक हद तक व्याख्या ऊपर आ चुकी है। यहाँ मैं क़ुरआन की एक आयत नक़ल करूंगा जो इस्लामी दृष्टिकोण से ख़ुदा की धारणा को संक्षिप्त परन्तु पूर्ण रूप से प्रस्तुत करती है—

"अल्लाह, वह ज़िन्दा ख़ुदा जो सम्पूर्ण सृष्टि को संभाले हुए है, उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं, उसको न ऊंघ लगती है

और न उसे नींद आती है। ज़मीन व आसमान में जो कुछ है, सब उसी का है। कौन है जो उसके सामने उसकी आज्ञा के बिना बोलने की हिम्मत कर सके? वह जानता है जो कुछ बन्दों के आगे है और जो कुछ बन्दों के पीछे है। उसके ज्ञान में जो कुछ है, उसमें से कुछ भी कोई हासिल नहीं कर सकता, मगर यह कि वह ख़ुद ही किसी को कुछ दे दे। उसकी हुकूमत पूरी दुनिया पर छाई हुई है और उसकी देखभाल उसके लिए थका देने वाला काम नहीं है। बस, वही एक सर्वोच्च एवं सर्वश्रेष्ठ सत्ता है।" (सूरः बक़रः २५५)

दूसरी चीज़ जो ख़ुदा के रसूल ने हमको बताई, वह मनुष्य के पैदा होने का उद्देश्य और सृष्टि के साथ उसका सम्बन्ध है। उसने बताया कि मनुष्य को इस लिए पैदा किया गया है, ताकि उसे आज़माया जाये। मनुष्य को कर्म की स्वतन्त्रता देकर उसके पास अल्लाह ने अपनी प्रसन्नता भेज दी है। अब वह देखना चाहता है कि कौन अपने स्वामी की प्रसन्नता के अनुसार चलता है और कौन उसके विरुद्ध अमल करता है। सृष्टि के साथ मनुष्य का जो सम्बन्ध है, वह भी इसी उद्देश्य के अन्तर्गत है। यह सृष्टि किसी व्यक्ति या राष्ट्र की जायदाद नहीं है, न वह कोई अललटप जगह है, बल्कि वह इसलिए है, ताकि मनुष्य को अपना कर्त्तव्य पूरा करने में मदद दे। यह संसार वास्तव में हमारा वह कर्म-क्षेत्र है जहां रहकर हमें अपना इम्तिहान देना है, इसके सिवा संसार की और कोई हैसियत नहीं। हमारे इस इम्तिहान की एक मुद्दत है। एक व्यक्ति की मुद्दत उसकी उम्र तक है और सम्पूर्ण मानवता की मुद्दत उस समय तक है जब तक मानव-पैदाइश का यह सिलसिला जारी है। इसके बाद सृष्टि का स्वामी सबको इकट्ठा करेगा और प्रत्येक के कर्मों के अनुसार उसको इनाम देगा या सज़ा। इस इनाम या सज़ा पाने की जगह जन्नत और जहन्नम है।

इस धारणा का नाम आख़िरत है। मौजूदा संसार हमारे जीवन का

आरम्भ है और आख़िरत हमारे जीवन का अन्त। इस प्रकार अल्लाह ने हमारे भविष्य के बारे में हमको सूचना दी है। यह भविष्य का संसार हमारी निगाहों से ओझल रखा गया है, क्योंकि हमारी परीक्षा की स्थिति में होने की हैसियत इसी का तक़ाज़ा करती थी। परन्तु जब परीक्षा की मुद्दत पूरी हो जायेगी तो यह छिपी हुई दुनिया बिल्कुल उसी प्रकार हमारे सामने आ जायेगी जिस प्रकार मौजूदा संसार हमको साफ़ नज़र आ रहा है। इस संसार में बज़ाहिर हमको केवल एक ही जीवन दिखाई देता है, परन्तु किसी वस्तु की वास्तविकता उतनी ही नहीं होती, जितनी वह दिखाई दे रही हो। सूर्य का प्रकाश-बज़ाहिर एक पीली चमकदार-सी वस्तु है, परन्तु वास्तव में वह सात रंगों का योग है। ठीक इसी तरह हमारे मौजूदा जीवन के भीतर एक और जीवन छिपा हुआ है, जिसको हम मरने के बाद देखेंगे, जहां हम मरने के बाद पहुंचा दिये जायेंगे।

वह आख़िरत एक मात्र अलौकिक सिद्धान्त नहीं है, बल्कि हमारे जीवन से इसका गहरा सम्बन्ध है। इतिहास से मालूम होता है कि जब मनुष्य ख़ुदा के भय से बेपरवाह हो जाता है, तो फिर कोई चीज़ नहीं जो उसको दूसरों पर अत्याचार करने और दूसरों को लूटने से रोक सके। जिन लोगों ने केवल क़ानून और राजनीति द्वारा सुधार की कोशिश की है, उनकी कोशिशों ने केवल लूट खसोट की शक्लों को बदला है, अस्ल स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं किया है। वास्तविक सुधार तो उसी समय सम्भव है जबकि मनुष्य के भीतर पथभ्रष्टता से बचने और संमार्ग पर चलने की भावना पैदा हो जाये। इस भावना को उभारने वाली चीज़ केवल ख़ुदा की पूछ-ताछ और उस की पकड़ का भय है। हम मजबूर हैं कि न्यायप्रिय व सदाचारी व्यक्ति बनने के लिए आख़िरत का सहारा लें। इसके सिवा किसी और साधन द्वारा हम इस मक़सद को हासिल नहीं कर सकते।

कुछ लोग कहते हैं कि आख़िरत की धारणा एक मन-घड़त धारणा है। हालांकि जिन दलीलों को आधार मान कर आख़िरत को

'काल्पनिक' कहा जाता है, यदि उनको सही मान लिया जाये तो सम्पूर्ण सृष्टि काल्पनिक माननी पड़ जाती है, यहां तक कि हमारा अपना वजूद भी काल्पनिक मात्र मालूम होने लगता है। परन्तु मैं इस पर बहस नहीं करूंगा। इसके जवाब में यहां मैं केवल इतना कहना चाहता हूं कि आख़िरत यदि काल्पनिक है, तो वह हमारे लिए इतनी ज़रूरी क्यों है? ऐसा क्यों है कि इसके बिना हम सही मायनों में कोई सामाजिक व्यवस्था बना ही नहीं सकते? इन्सान के दिमाग़ से इस धारणा को निकालने के बाद क्यों हमारा पूरा जीवन नष्टप्राय हो जाता है? क्या कोई काल्पनिक धारणा जीवन के लिए इतनी ज़रूरी हो सकती है? क्या इस सृष्टि में कोई ऐसी मिसाल पायी जाती है कि एक चीज़ वास्तविकता में मौजूद न हो, परन्तु इसके बावजूद वह इतनी वास्तविक बन जाये, जीवन से उसका कोई नाता न हो परन्तु इसके बावजूद वह जीवन से इतनी सम्बन्धित नज़र आये? जीवन के सही और न्यायपूर्ण संगठन के लिए आख़िरत की धारणा का इतना अधिक अनिवार्य होना खुद यह ज़ाहिर करता है कि आख़िरत इस सृष्टि का सबसे बड़ा तथ्य है। वह यद्यपि हमारी आंखों से हमको नज़र नहीं आती परन्तु इसके बाद भी वह नज़र आने वाली तमाम चीज़ों से अधिक स्पष्ट और निश्चित है। किसी मनुष्य के लिए सम्भव नहीं है कि वह होश-हवास रखते हुए इसका इन्कार कर सके।

तीसरी चीज़ जो खुदा के रसूल ने बताई है, वह इस सवाल का जवाब है कि मनुष्य खुदा के साथ सम्बन्ध जोड़ने के लिए क्या करे? इस सिलसिले में जो कुछ आपने बताया है, उसको तीन शीर्षकों के तहत जमा किया जा सकता है—ज़िक्र, (स्मरण) इबादत (भक्ति) और क़ुर्बानी (बलिदान)—ज़िक्र से तात्पर्य यह है कि खुदा के साथ अपने सम्बन्ध को प्रतिक्षण दिमाग़ में ताज़ा रखा जाए और खुदा को उसकी तमाम हैसियतों के साथ इस तरह याद किया जाता रहे, जिस तरह रसूल ने याद करने के लिए बताया है। इबादत से तात्पर्य वे मुख्य शारीरिक कार्य हैं जो शरीअत में इसलिए मुक़र्रर किये गये हैं, ताकि

मनुष्य की भौतिक हैसियत पर उसकी आध्यात्मिक हैसियत को छा जाने दिया जाए और उससे ऐसे कार्य कराये जायें जो मनोवैज्ञानिक रूप से उसको ख़ुदा के क़रीब करने वाले हों। क़ुर्बानी अपनी भावनाओं और अपनी सम्पत्ति को ख़ुदा की राह में ख़र्च करने का नाम है। मनुष्य जब अपनी प्यारी चीज़ों को ख़ुदा के नाम पर क़ुर्बान कर देता है तो मानो वह अपनी भावनाओं को ख़ुदा के सुपुर्द कर देता है और अपनी रुचियों को आख़िरी हद तक ख़ुदा की ओर मोड़ने की कोशिश करता है। इस प्रकार यह क़ुर्बानी मनुष्य को उसके पालनहार से बिल्कुल क़रीब कर देती है।

यह ज़िक्र, इबादत और क़ुर्बानी एक दूसरे से अलग-अलग चीज़ें नहीं हैं, बल्कि एक ही तथ्य के विभिन्न रूप हैं। यह मनुष्य की ओर से अपने पालनहार के लिए अति घनिष्ट सम्बन्ध का प्रदर्शन है। बन्दा जब अपने प्रिय स्वामी को अपने दिल और ज़ुबान से याद करता है तो उसको हम ज़िक्र कहते हैं। जब वह भावनाओं के साथ अपने आपको ख़ुदा के आगे डाल देता है तो उसका नाम इबादत है और जब वह अपने जीवन की सारी पूंजी ख़ुदा के लिए लुटा देता है तो यही क़ुर्बानी है। रसूल इन चीजों का तरीक़ा बताता है और इसके लिए मनुष्य को तैयार करता है।

चौथी चीज़ मनुष्य का व्यक्तिगत आचरण और उसका सामाजिक नियम है। इस सम्बन्ध में अति विस्तृत और तफ़्सीली आदेश दिये गये हैं। एक कर्त्तव्यपरायण और सत्यप्रिय जीवन के लिए जिन सहीतरीन उसूलों की ज़रूरत है, वे सभी सविस्तार बता दिये गये हैं, परन्तु व्यक्तिगत उपदेशमात्र से किसी समाज के भीतर सामान्य सुधार नहीं हो सकता और न यही सम्भव है कि सुधार किये गये व्यक्ति देर तक अपने रवैये पर जमे रह सकें, इसलिए एक व्यापक सामाजिक नियम भी हमारे सुपुर्द कर दिया गया है, ताकि उसके आधार पर एक स्टेट बनाया जाये और सामाजिक स्तर पर ख़ुदा की प्रसन्नता क़ायम करने का प्रयास किया जाये। दूसरे शब्दों में इस्लाम

केवल एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों को ही ईश्वरवादी देखना नहीं चाहता बल्कि पूर्ण मानव जाति में एक ऐसी क्रांति पैदा करना चाहता है जिससे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की तमाम प्रतिकूलतायें ख़त्म हो जायें और तमाम मनुष्य मिल कर ख़ुदा का आज्ञापालन करने लगें।

यह एक ऐसी विशेषता है जो तमाम धर्मों में केवल इस्लाम को प्राप्त है। जहां तक ख़ुदा और उससे सम्बन्धित दूसरी अलौकिक धारणाओं का मामला है वे दूसरे धर्मों में भी किसी न किसी हद तक मौजूद हैं परन्तु अगर यह प्रश्न किया जाए कि क्या किसी धर्म के पास ऐसा कोई सामाजिक ढांचा और संविधान-प्रणाली है जिसके आधार पर स्टेट का निर्माण किया जा सके, तो इसके उत्तर में इस्लाम के सिवा किसी और धर्म का नाम नहीं लिया जा सकता। इस्लाम के पास वे बुनियादी क़ानून भी सही शक्ल में सुरक्षित हैं जो ख़ुदा ने मनुष्य के पथप्रदर्शन के लिए भेजे थे और इन क़ानूनों की बुनियाद पर जो सामाजिक व्यवस्था बनाई गई थी, उसका रिकार्ड भी पूरी तरह इतिहास में मौजूद है। यह ख़ुदा की एक ऐसी नेमत है जिसको अगर अपना लिया जाए तो वे तमाम समस्यायें हल हो सकती हैं जो आज की मानवता को घेरे हुए हैं।